ResearchGate

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/371875089

Special Library collection Development: special reference to Advocate General Library Bilaspur CG

Article · June 2023

DOI: 10.26761/1JRLS

CITATIONS
0

READS
50

3 authors, including:

Sanjay Shahjit
Mahaveer Academy of Technology and Science University
11 PUBLICATIONS **0** CITATIONS

SEE PROFILE

All content following this page was uploaded by Sanjay Shahjit on 27 June 2023.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

विशिष्ट पुस्तकालय का संग्रह विकास : एक अध्ययन
(कार्यालय महाधिवक्ता, बिलासपुर छत्तीसगढ़ के संदर्भ में)

*संजय शाहजीत, **लकेश्वर प्रसाद एवं ***अमृत कुमार पोर्ते

सारांश–पुस्तकालय किसी भी देश की ज्ञान धरोहर एवं संस्कृति के संरक्षक होते है। पुस्तकालय संग्रह जितना विशाल होगा पाठकों की सूचना आवश्यकता को पूरा करने प्रभावी पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करने में सक्षम होते हैं। पुस्तकालय में मुद्रित एवं अमुद्रित सामग्रियां संग्रहित होती जिनका पुस्तकालय नीति और सिद्धांत से संचालन की प्रकिया का पालन किया जाता है। पुस्तकालय विज्ञान के पंचम नियम के अनुसार पुस्तकालय को हमेशा विकासशील होना चाहिए उनका आकार एवं संग्रह में निरंतर वृद्धि आवश्यक है। अच्छी पुस्तकालय सेवा से ज्यादा से ज्यादा उपयोक्ता पुस्तकालय में आने लगेंगे जिससे पुस्तकालय के उद्देशों की पूर्ति होगी। उपयोगी लेखों के प्रति जागरूक तरीके से उनका चयन एवं अधिग्रहण एक अनिवार्य पहलू है।महाधिवक्ता पुस्तकालय विशिष्ट पुस्तकालयमें कानून से संबंधित 13500 से ज्यादा संसाधनों का वृहद् संग्रह है जिसमें प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक दोनों माध्यमों में उपलब्ध है। वर्तमान समय में कार्यालयीन कार्यों हेतु कम्प्यूटर प्रणाली अपनाया गया है लेकिन पुस्तकालय संचालन की प्रक्रिया परंपरागत तरीके अर्थात रजिस्टर प्रणाली से संचालित हो रही है। ई– संसाधनों के प्रति आवश्यकता स्पष्ट है कि यहां लीगल डेटाबेस में सुप्रीम कोर्ट केस ऑनलाइन स्त्रोत, ऑल इंडिया रिपोर्टर और मनुपात्रा की सुविधाएं है।

कुंजी शब्द– विशिष्ट पुस्तकालय, संग्रह विकास, महाधिवक्ता पुस्तकालय।

परिचय : किसी संस्था के लिए उसका पुस्तकालय ज्ञान धरोहर एवं संस्कृति के संरक्षक होती है। पुस्तकालय संग्रह जितना विशाल होगा पाठकों की सूचना आवश्यकता को पूरा करने एवं सुचारू रूप से प्रभावी पुस्तकालय सेवाएं प्रदान कर पाएंगे। संग्रह का विकास को बनाए रखना पुस्तकालय प्राथमिकता में होना चाहिए जिसके द्वारा उपयोक्ताओं की सूचना, ज्ञान एवं शिक्षा सुनिश्चित हो सके। संग्रह विकास का तात्पर्य पुस्तकालय में संग्रहित मुद्रित एवं अमुद्रित सामग्रियों से है जिसमें पुस्तकालय नीति और सिद्धांत, तकनीक एवं प्रक्रियाओं का पालन करते हुए विकास और चयन की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है।

पुस्तकालय विज्ञान के पंचम नियम के अनुसार पुस्तकालय को हमेशा विकासशील होना चाहिए उनका आकार एवं संग्रह में निरंतर वृद्धि होनी चाहिए, क्योंकि प्रयोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नई सामग्री का निरंतर क्रय करना आवश्यक है। विशिष्ट पुस्तकालय में संग्रह विकास के लिए लचीला पुस्तकालय भवन का होना बहुत जरूरी है। संग्रह की वर्तमान एवं भविष्य को ध्यान में रखकर योजना बनाना अनिवार्य है। पुस्तकालय में ऐसी नीति एंव सूची संहिता का पालन किया जाता है जहां पर एक निश्चित वर्गीकरण नियम के अनुसार संग्रह का व्यवस्थापन एवं सूची के भौतिक स्वरूपों का आकार, ग्रंथ वृद्धि के साथ सूची संग्रह में वृद्धि होना स्वाभाविक हैं।

परिभाषाएं

हैरॉड्स लाइब्रेरियन्स ग्लोसरी 6वें संस्करण के अनुसार " केवल वर्तमान आवश्यकताओं की ही पूर्ति नहीं बल्कि आगामी आने वाले वर्षों तक के लिए एक सुसंबद्ध एवं विश्वसनीय संग्रह अधिग्रहण कार्यक्रम योजना बनाने की प्रक्रिया जिससे पुस्तकालय सेवा के उद्देश्यों की पूर्ति की जा सके।"1

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विश्वकोश के अनुसार "पुस्तकालय संगंह का तात्पर्य पुस्तकालय में संग्रहित सामग्रियों तथा पुस्तकों, पांडुलिपियों, सामयिक प्रकाशनों, शासकीय प्रलेखों, पैम्फलेट्स, ग्रंथ सूचियों, प्रतिवेदनों, अभिलेखों, माइक्रोफिल्म रील्स, माइक्रोकार्डस, माइक्रोफिश, पंच कॉर्ड्स, कम्प्यूटर टेप्स आदि के कुल योग से है।"1

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि पुस्तकालयों में संग्रह विकास बढ़ाने के लिए सुसंबद्ध तरीके से कार्यक्रम का नियोजन करना जिससे संग्रहित सामग्रियों, अभिलेखों का वृद्धि और विकास होता रहे।

विशिष्ट पुस्तकालय संग्रह विकास के उद्देश्य

विशिष्ट पुस्तकालय में संग्रहित सामग्री विशेष अर्थात एक विषय से संबंधित होती है जिसे अपने विशेष पाठक वर्ग की सूचना सेवा को पूरा करने की अपेक्षा रहती है। अतः विशिष्ट सेवा प्रदान करने के लिए इनके उद्देश्य निम्नानुसार स्पष्ट किए जा सकते हैं–

विशिष्ट पाठकों की सूचना आवश्यकता को पूरा करना।

आदर्श पुस्तकालय संग्रह का विकास प्राथमिकता में आवश्यक।

संसाधन एवं उपलब्ध स्त्रोतों का आदान–प्रदान करना एवं अंतर ग्रंथालय आदान सेवा।

विशिष्ट सूचनाओं का संकलन, विश्लेषण, एवं मूल्यांकन करना।

विशिष्ट पुस्तकालय हेतु संदर्भ एवं प्रलेख वितरण सेवा।

पुस्तकालय संग्रह का निरंतर आंकलन एवं समीक्षा आवश्यक।

पुस्तकालय विज्ञान के नियमानुसार उपयोगी ज्ञान की उपलब्धता।

पुस्तकालय हेतु ऐसी नीति का विकास करना जिससे उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।

संग्रह विकास की आवश्यकता क्यों?

*असिस्टेंट प्रोफेसर, मैट्स स्कूल ऑफ लाइब्रेरी साइंस, मैट्स युनिवर्सिटी रायपुर छततीसगढ़
**असिस्टेंट लाइब्रेरियन, कार्यालय महाधिवक्ता पुस्तकालय, बिलासपुर छततीसगढ़
***शोधार्थी, मैट्स स्कूल ऑफ लाइब्रेरी साइंस, मैट्स युनिवर्सिटी रायपुर छत्तीसगढ

विशिष्ट पुस्तकालय प्रक्रिया– पुस्तकालय में उपयोगकर्ताओं को सही तरीके से उनकी आवश्यक सामग्री आसानी से प्राप्त हो सके, इसलिए पुस्तकालय में ऐसी प्रक्रिया का पालन किया जाता है जिससे पुस्तकालय संचलन बेहतर तरीके से हो सके और पाठकों को पूर्णरूप से उनकी सूचना आवश्यकता बेहतर संग्रह से पूरा किया जा सकता है। अच्छी पुस्तकालय प्रक्रिया से ज्यादा से ज्यादा उपयोक्ता पुस्तकालय की ओर आकर्षि होंगे और पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्यों की पूर्ति भी होगी।

सूचना विस्फोट– वर्तमान परिप्रेक्ष में सूचना इतनी तेजी से प्रकाशित हो रही है कि उनका चयन और रखरखाव में समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनमें से वैज्ञानिक दृष्टि से उपयुक्त सूचना कौन सी है यह तय कर पाना कठिन होता है। आज हर विषय के क्षेत्र में वैज्ञानिक लेख लिखने वालों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है जिनमें से बहुत सारे लेख उपयोगी नहीं होते। जिनमें से उपयोगी लेखों के प्रति वैज्ञानिक और जागरूक तरीके से उनका चयन एवं अधिकग्रहण आवश्यक है।

तकनीकी कार्य– पुस्तकालय संचालन प्रक्रिया में ग्रंथों के रखरखाव हेतु एक तकनीक प्रक्रिया का पालन किया जाता है। पुस्तकालय के तकनीकी कार्यों के अंतर्गत वर्गीकरण एवं सूचीकरण प्रमुख रूप से किया जाता है। जिनमें ग्रंथों को एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान कर उनकी पहचान की जाती है एवं सूचीकरण प्रक्रिया में ग्रंथों का सूची तैयार कर पाठकों के विभिन्न अभिगम के माध्यम से सूचना प्रदान करने का कार्य किया जाता है।

उपयोक्ता की मांग– उपयोक्ता को उसके मांग के आधार पर पर पाठ्य सामग्री मिल सके और उसकी पूर्ति को महत्वपूर्ण मानकर उचित संसाधनों से उपलब्ध कराना चाहिए, क्योंकि सभी पाठकों की सूचना आवश्यकता अलग–अलग होती है। अतः उनके द्वारा ऐसे सूचना की मांग की जाती है जो अद्यतन हो। ऐसी स्थिति के निवारण हेतु पुस्तकालय को मानकों के अनुसार संसाधनों का चयन कर उपलब्ध कराना चाहिए।

सूचना संचार प्रौद्योगिकी– आज का युग कम्प्यूटर का युग है। नए प्रौद्योगिकी का उत्पादन हो रहा है,पुस्तकलाय में भी संग्रह विकास के लिए कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी को अपनाया जा रहा है। त्वरित गति से कार्य करने के कारण काफी सहायक सिद्ध हुआ है जबकि मानवीय तरीके से किये कार्यों में दिनों या महिनों का समय लगता है। प्रयोक्ता अपनी चाही गई सूचना ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस के माध्यम से जान सकता है किवह सामग्री पुस्तकालय में उपलब्ध है की नहीं। नये–नये कम्प्यूटर प्रोग्राम, साफ्टवेयर का निर्माण हो रहा है और ये सब कम्प्यूटर नेटवर्क के माध्यम से संभव हो पाया है। इसके अंतर्गत दो महत्वपूर्ण तत्व शामिल है पहला कम्प्यूटर की उपलब्धता एवं ऑनलाइन सेवाएं।अतः प्रकाशकों से यदि कलेक्शन के लिए क्रय आदेश जारी करना या पत्राचार करना काफी आसान हो गया है जिससे कम समय साध्य और परिश्रम का संचय होता है।

क्रय आदेश– पुस्तकालय संग्रह विकास के लिए बड़ी सावधानी रखनी चाहिए। ग्रंथ चयन के उपरांत आदेश इस प्रकार से देना हमारे संग्रह किस प्रकार का है और पुस्तकालय में किस प्रकार के प्रयोक्ता आते है एवं कौन–कौन से संसाधनों का उपयोग करते है। उनकी समस्या या कोई मांग है तो इसे सूची में शामिल किया जाना चाहिए।

बजट– पुस्तकालय खार्चों के लिए बजट का होना अनिवार्य है, पुस्तकालय संग्रह बढ़ाने के लिए ग्रंथ एवं ग्रंथेत्तर सामग्री की खरीदी आवश्यक रूप से की जानी चाहिए। इसकी कमी से पुस्तकालय के लिए संसाधनों का अभाव हो सकता है। पर्याप्त संग्रह विकास हेतु चयनीत एवं गुणवत्तापूर्ण सामग्री का विक्रेता से कर सकते हैं।

कार्यालय महाधिवक्ता का परिचय

न्यायाधानी के नाम से प्रसिद्ध बिलासपुर शहर अपरा नदी के तट पर स्थित राज्य का प्रमुख जिला एवं शहर है। यह औद्योगिक दृष्टि से उन्नत एवं शैक्षणिक रूप से विकसित जिला है। जिले में अनेक ऐतिहासिक एवं राज्यकीय महत्व के धरोहर विद्यमान है। महाधिवक्ता कार्यालय विशिष्ट पुस्तकालय छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय बोदरी बिलासपुरपरिसर में स्थित है एवंराज्य शासन के प्रशासकीय संचालन गतिविधियों का केन्द्र के रूप में कार्यरत है।राज्य स्थापना के पूर्व यह मध्यप्रदेश शासन का भाग था एवं राज्य

छायाचित्र– कार्यालय महाधिवक्ता बिलासपुर, छग

स्त्रोतः https://jantaserishta.com/local/chhattisgarh/cm-bhupesh-baghel-expressed-happiness-over-digitization-of-work-of-advocate-generals-office-1249493

विभाजन के पश्चात महाधिवक्ता कार्यालयद्वाराछत्तीसगढ़ राज्य सरकार के कानूनी मामलों की पैरवी करना है।यह छत्तीसगढ़ शासन के कानून एवं अधिनियम मामलों के विभाग के अंतर्गत आता है।

कार्यालयमहाधिवक्ता विशिष्ट पुस्तकालय

पुस्तकालय महाधिवक्ता कार्यालय के भवन में स्थित है महाधिवक्ता कार्यालय पुस्तकालय विधि उपयोगकर्ताओं की सूचना आवश्यकता को संतुष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मूलरूप से पुस्तकालय स्त्रोतों का उपयोगकर्ता के रूप विशिष्ट वर्ग जैसे शासकीय अधिवक्ता, कार्यालय में कार्यरत समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण इसके पाठक वर्ग है। एक विशिष्ट पुस्तकालय की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास इस पुस्तकालय द्वारा किया जा रहा है। पुस्तकालय में विधि संबंधित 13500 से ज्यादा संसाधनों का वृहद् संग्रह उपलब्ध है जिसमें प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में उपलब्ध है। विधि अधिकारियों को उद्धरण संदर्भ के लिए इसकी आवश्यकता होती है

एवं किसी प्रकरण के संदर्भ में उद्धरण की आवश्यकता पर सूचना की मांग की जाती है।यहां सूचना उपयोग के लिए कोई भी शुल्क नहीं लिया जाता है। प्रिंट प्रारूप में उपलब्ध सूचना स्त्रोतों में ज्यादातर ऑल इंडिया रिपोर्टर,सुप्रीम कोर्ट केस, मध्यप्रदेश लॉ

संसाधनों के स्वरूप	संसाधनों के प्रकार
मुद्रित माध्यम	ऑल इंडिया रिपोर्टर
	सुप्रीम कोर्ट केस
	मध्यप्रदेश लॉ जर्नल
	छत्तीसगढ़ लॉ टाइम्स
	छत्तीसगढ़ लॉ टाइम्स
	छत्तीसगढ़ लोकल एक्ट
	ऑल सेंट्रल बार एक्ट
अमुद्रित माध्यम	सुप्रीम कोर्ट केस
	ऑल इंडिया रिपोर्टर
	मनुपात्रा

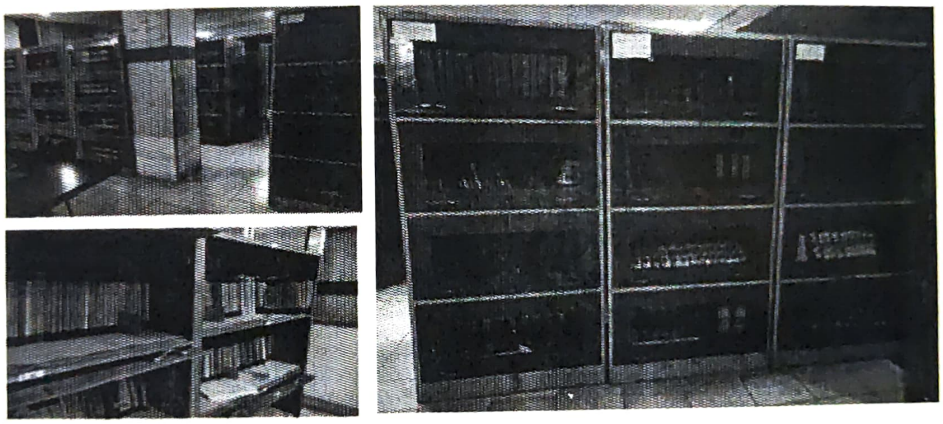

छायाचित्र– कार्यालय महाधिवक्ता विशिष्ट पुस्तकालय

निष्कर्ष एवं सुझाव –

संग्रह विकास को बनाए रखना पुस्तकालय के अनिवार्य सेवा में पहली प्राथमिकता होनी चाहिए जब तक पुस्तकालय में एक अच्छा संग्रह उपलब्ध नहीं होता प्रयोक्ताओं को विविध प्रकार की उनकी सूचना खोज एवं आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम नहीं होंगा। कार्यालय महाधिवक्ता विशिष्ट पुस्तकालय द्वारा कानूनी सूचना चाहने वालों को उनकी सूचना अपेक्षा को पूरा किया जा रहा है। हालांकि संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी युग में यहां अभी भी पुस्तकालय प्रबंधन एवं अन्य कार्यों के लिए परंपरागत तरीकोंसे संचालन किया जा रहा है जिस हेतु प्रबंधन को विशिष्ट पुस्तकालय की ओर ध्यान देने की अनिवार्य आवश्यकता हैं। पुस्तकालय में भी तकनीकी विकास को आत्मसात करना जिसमें डिजिटल पुस्तकालय पर्यावरण एवं सूचना संसाधन हेतु डिपॉजिटरी पुस्तकालय की अवधारणा सफल सिद्ध हो सके।

संदर्भ –

1. Sharma,Prahlad, "Library Management." Universal Publication, p11-12,2009, Jaipur.
2. Pal,Narendra and Barman, Rajni Kanta(2021) International Journal of Research in Library Science (IJRLS), ISSN: 2455-104X, DOI: 10.26761/IJRLS.7.1.2021.1383, 23 March. 2021, p170-175.https://www.ijrls.in/wp-content/uploads/2021/03/IJRLS-1383.pdf date 31.12.2022 3.35pm https://advocategeneralcg.com/
3. date 31.12.2022 4pm https://www.liscafey.com/2018/06/functions-and-services-of-special.html
4. date 31.12.2022 5.15pm https://jantaserishta.com/local/chhattisgarh/cm-bhupesh-baghel-expressed-happiness-over-digitization-of-work-of-advocate-generals-office-1249493
5. date 02.01.2023 3pm https://en.wikipedia.org/wiki/Advocate_general_(India)
6. 09.01.2023 2.20pm.

View publication stats